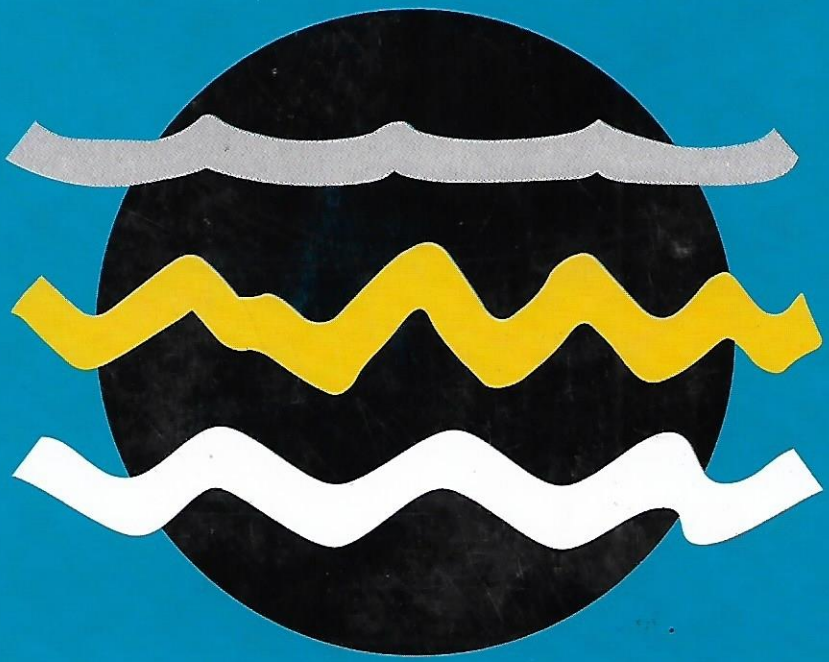

चरकसंहिता

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

।। श्रीः ।।

चौखम्बा आयुर्विज्ञान ग्रन्थमाला
११

महर्षिपुनर्वसु-आत्रेयोपदिष्टा श्रीमदग्निवेशप्रणीता

चरक-दृढबलप्रतिसंस्कृता

चरकसंहिता

परिशिष्टाद्यलंकृतविशेषवक्तव्यादिसमन्वित-
'चरकचन्द्रिका' हिन्दीव्याख्याविभूषिता

पूर्वार्द्ध * सूत्रनिदानविमानशारीरेन्द्रियस्थानात्मकः)

व्याख्याकारः
डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
साहित्य-आयुर्वेद-आचार्य
एम० ए०, पी-एच. डी०, डी० एस-सी० ए०

प्राक्कथन-लेखकः
डॉ० गङ्गासहाय पाण्डेय
ए० एम० एस०
भूतपूर्व प्राध्यापक तथा चिकित्सक
आयुर्वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

University Department of Yoga RU
No/PGDY/ 193
Library

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

चरकसंहिता

'चरक-चन्द्रिका'-हिन्दीव्याख्या-विशेष वक्तव्य आदि से संवलित

व्याख्याकार

डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

प्राक्कथन लेखक

डॉ. गङ्गासहाय पाण्डेय एवं डॉ. जनार्दन देशपाण्डे

सम्प्रति उपलब्ध चरक-संहिता 8 स्थानों तथा 120 अध्यायें में विभक्त है । प्रस्तुत संहिता काय-चिकित्सा का सर्वमान्य ग्रन्थ है । जैसे समस्त संस्कृत-वाङ्मय का आधार वैदिक साहित्य है, ठीक वैसे ही काय-चिकित्सा के क्षेत्र में जितना भी परवर्ती साहित्य लिखा गया है, उन सब का उपजीव्य चरक है ।

चरकसंहिता के अन्त में ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है—**यदिहास्ति तद्न्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'** । इसका अभिप्राय यह है कि काय-चिकित्सा के सम्बन्ध में जो साहित्य व्याख्यान रूप में अथवा सूत्र रूप में इसमें उपलब्ध है, वह अन्यत्र भी प्राप्त हो सकता है, और जो इसमें नहीं हैं, वह अन्यत्र भी सुलभ नहीं है । चरक का यह डिण्डिमघोष तुलनात्मक दृष्टि से सर्वदा देखा जा सकता है ।

दूसरी विशेषता महर्षि चरक की यह रही है—**'पराधिकारे न तु विस्तरोक्तिः'** । इन्होंने अपने तन्त्र के अतिरिक्त दूसरे विषय के आचार्यों के क्षेत्र में टाँग अड़ाना पसन्द नहीं किया, अतएव उन्होंने कहा है—**'अत्र धान्वन्तरीयाणाम् अधिकारः क्रियाविधौ'** ।

इस प्रकार के आदर्श ग्रन्थ पर भट्टारहरिचन्द्र आदि अनेक स्वनामधन्य मनीषियों ने टीकाएँ लिखकर इसके सहस्यों का उद्घाटन समय-समय पर किया है ।

इसके पूर्व भी चरक की कतिपय व्याख्याएँ लिखी गयी हैं, वे विषय का बोध भी कराती हैं । चरकसंहिता की **चरक-चन्द्रिका** टीका कें रूप में लेखक का इस दिशा में यह स्तुत्य प्रयास है । इसमें यथसम्भव चरक के रहस्यमय गूढ़ स्थलों का सरस भाषा में आशय स्पष्ट किया गया है । स्थल विशेष पर पर पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी नाम भी दे दिये गये हैं । अवश्यकतानुसार प्रकरण विशेष पर आधुनिक चिकित्सा-सिद्धान्तों का तुलनात्मक दृष्टि से भी समावेश कर दिया गया है, जिससे पाठकों को विषय को समझने में सुविधा हो । साथ ही कठिन स्थलों को विशेष वक्तव्य तथा टिप्पणियों द्वारा प्राञ्जनल किया गया है ।

प्रथम भाग - (सूत्र-निदान-विमान-शारीर-इन्द्रियस्थान)

द्वितीय भाग - (चिकित्सा-कल्प सिद्धिस्थान)

महर्षिणा सुश्रुतेन प्रणीता

सुश्रुतसंहिता

'सुश्रुतविमर्शिनी'-हिन्दीव्याख्या विमर्शादिभिश्च समन्वितः

प्राक्कथन-लेखक **आचार्य प्रियवत शर्मा** • हिन्दी व्याख्याकार **डॉ. अनन्तराम शर्मा**

प्रथमो भागः (सूत्र-निदानस्थानात्मकः) * द्वितीयो भागः (शारीर-चिकित्सा-कल्पस्थानात्मकः)

तृतीयो भागः (उत्तरतन्त्रात्मक)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन-वाराणसी